चिकित्सीय
आपातकाल/एम्बुलेंस सेवा के लिए
कृपया 112 पर डायल करें।

अण्डमान निकोबार द्वीप समाचार

रजि.न.34300/80 | संख्या 238 | श्री विजय पुरम, शनिवार, 05 सितम्बर 2026 | web: dt.andamannicobar.gov.in | 2.00 रूपए

#न्यू अण्डमान में लघु मॉड्यूलर रिएक्टर स्थापित किए जाने की सिफारिश के क्रम में, अंतरराष्ट्रीय कंटेनर ट्रांसशिपमेंट टर्मिनल, ग्रीनफील्ड एयरपोर्ट, गहरे पानी के बहुउद्देशीय बंदरगाह, विद्युत संयंत्र आदि जैसी महत्वाकांक्षी वृहत परियोजनाओं से संबंधित बिजली की बढ़ती आवश्यकता को पूरा करने के लिए विद्युत क्षमता में तेजी से विस्तार की दिशा में यह पहल की जा रही है।

परमाणु ऊर्जा विभाग के अंतर्गत भाभा परमाणु अनुसंधान केंद्र के वैज्ञानिकों की एक टीम 04 से 08 सितंबर, 2026 तक अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के तीनों ज़िलों में प्रस्तावित स्थलों के निरीक्षण एवं उपयुक्त स्थल के चयन के लिए द्वीपों के दौरे पर है।

इस दौरान वैज्ञानिकों की टीम ने आज लोक निवास में अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के माननीय उप राज्यपाल एवं द्वीप विकास एजेंसी के उपाध्यक्ष एडमिरल डी.के. जोशी से मुलाकात की। टीम ने प्रस्तावित योजना के संभावित स्थल तथा उससे संबंधित अन्य महत्वपूर्ण विशेषताओं के संबंध में प्रस्तुतीकरण भी दिया।

संदेश

‘शिक्षक दिवस’ के अवसर पर अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के शिक्षक समुदाय को मेरी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ। इस अवसर पर मैं भारत के पूर्व राष्ट्रपति, भारत रत्न से सम्मानित एक प्रतिष्ठित शिक्षक, डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन को उनकी जयंती पर सादर श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

शिक्षा एक प्रगतिशील, प्रबुद्ध एवं ज्ञान–आधारित समाज की आधारशिला है। विकसित भारत@2047’ के संकल्प को साकार करने की दिशा में अग्रसर होते हुए, युवा मस्तिष्कों का संवर्धन कर ज्ञानवान, कुशल, उत्तरदायी एवं संवेदनशील नागरिकों के निर्माण में शिक्षकों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है, ताकि वे भारतीय मूल्यों एवं सांस्कृतिक विरासत से दृढ़तापूर्वक जुड़े रहें।

मैं द्वीपसमूह के शिक्षकों की निष्ठा, समर्पण एवं प्रतिबद्धता की सराहना करता हूँ, जो भौगोलिक एवं लॉजिस्टिक चुनौतियों के पश्चात भी अपने दायित्वों का उत्कृष्टतापूर्वक निर्वहन कर रहे हैं। उनके अथक प्रयासों से हमारे युवाओं में जिज्ञासा, आलोचनात्मक चिंतन, अनुशासन, सत्यनिष्ठा एवं सेवा–भाव जैसी महत्वपूर्ण मानवीय एवं नैतिक प्रवृत्तियों का विकास हो रहा है।

मैं राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP) 2020 एवं राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (NCF) 2023 के उद्देश्यों को आगे बढ़ाने तथा हमारी युवा पीढ़ी को तीव्र गति से परिवर्तित हो रही विश्व की चुनौतियों एवं अवसरों का सामना करने के लिए तैयार करने में शिक्षकों के योगदान की सराहना करता हूँ।

मैं पुनः सभी शिक्षकों को अपनी हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ। मेरा विश्वास है कि आप इसी प्रकार युवा मस्तिष्कों को ज्ञान एवं प्रेरणा से प्रज्वलित करते हुए उनमें उच्च आदर्शों, नैतिक मूल्यों एवं सुदृढ़ चरित्र का निर्माण करते रहेंगे, ताकि हमारे युवा सशक्त, सक्षम एवं उत्तरदायी नागरिक बनकर एक सुदृढ़, समृद्ध एवं विकसित भारत के निर्माण में अपना सार्थक एवं महत्वपूर्ण योगदान दे सकें।

(एडमिरल डी. के. जोशी)
पीवीएसएम, एवीएसएम, वाईएसएम, एनएम, वीएसएम (अ.प्रा.)
उप राज्यपाल
अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह
एवं
उपाध्यक्ष, द्वीप विकास एजेंसी

केंद्रीय प्रशासनिक अधिकरण की सर्किट बैठक 7 से 18 सितंबर तक

श्री विजय पुरम, 4 सितम्बर।

सभी संबंधितों की जानकारी के लिए सूचित किया जाता है कि केंद्रीय प्रशासनिक अधिकरण (कैट), कोलकाता पीठ के उप–पंजीयक/कार्यालयाध्यक्ष द्वारा सूचित किया गया है कि पोर्ट ब्लेयर में 7 सितंबर, 2026 से 18 सितंबर, 2026 तक भौतिक रूप से सर्किट बैठक आयोजित की जाएगी। इस दौरान नए आवेदन भी स्वीकार किए जाएंगे।

जिन विभागों से संबंधित केंद्रीय प्रशासनिक अधिकरण (कैट) में मामले लंबित हैं, उनसे अनुरोध किया गया है कि वे संबंधित मामले के सभी आवश्यक दस्तावेज़ों के साथ सरकारी अधिवक्ता/पैनल अधिवक्ता से संपर्क करें तथा उन्हें मामले की विस्तृत जानकारी और तथ्य उपलब्ध कराएं, ताकि प्रशासन की ओर से सरकार के अधिवक्ता मामले की पूरी तैयारी के साथ प्रभावी ढंग से पैरवी कर सकें।

उप सचिव (विधि) से प्राप्त विज्ञप्ति में सभी विभागाध्यक्षों से भी अनुरोध किया गया है कि वे अपने नोडल अधिकारियों को सुनवाई की निर्धारित तिथि पर संबंधित दस्तावेज़ों के साथ अधिकरण में उपस्थित रहने के निर्देश दें, ताकि सुनवाई के दौरान सरकारी अधिवक्ता/पैनल अधिवक्ता को आवश्यक सहायता उपलब्ध कराई जा सके।

उत्तर व मध्य अण्डमान ज़िले की ‘दिशा’ समिति की बैठक सम्पन्न

विकास योजनाओं की प्रगति की समीक्षा, राष्ट्रीय राजमार्गों के कार्यों में गुणवत्ता एवं समयबद्धता पर ज़ोर

मायाबंदर, 4 सितंबर।

उत्तर व मध्य अण्डमान ज़िले की ज़िला विकास समन्वय एवं निगरानी समिति (दिशा) की बैठक आज उपायुक्त, उत्तर व मध्य अण्डमान के कार्यालय के सम्मेलन कक्ष में आयोजित की गई। बैठक की अध्यक्षता अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के माननीय सांसद एवं दिशा समिति के अध्यक्ष ने की।

बैठक के प्रारंभ में उत्तर व मध्य अण्डमान के उपायुक्त ने माननीय अध्यक्ष, समिति के सम्मानित सदस्यों, विशेष आमंत्रित सदस्यों के रूप में बैठक में शामिल ग्राम पंचायत प्रधानों तथा विभिन्न संबंधित विभागों के वरिष्ठ अधिकारियों का स्वागत किया।

बैठक के दौरान उत्तर व मध्य अण्डमान ज़िले में संचालित विभिन्न विकास योजनाओं एवं कार्यक्रमों की प्रगति की विस्तृत समीक्षा की गई। समिति ने योजनाओं के क्रियान्वयन की स्थिति, भौतिक एवं वित्तीय प्रगति, विभिन्न विभागों के बीच समन्वय तथा आम जनता को योजनाओं का लाभ प्रभावी एवं समयबद्ध तरीके से सुनिश्चित करने के लिए आवश्यक उपायों पर विस्तार से विचार–विमर्श किया।

इस दौरान उत्तर व मध्य अण्डमान क्षेत्र में राष्ट्रीय राजमार्गों की स्थिति तथा चल रहे निर्माण एवं विकास कार्यों की भी संबंधित राष्ट्रीय राजमार्ग अधिकारियों के साथ समीक्षा की गई। माननीय अध्यक्ष ने कार्यों को निर्धारित समय–सीमा के भीतर पूरा करने के साथ–साथ निर्माण कार्यों में उचित गुणवत्ता बनाए रखने और निर्धारित मानकों का पालन सुनिश्चित करने पर विशेष ज़ोर दिया। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा–निर्देश भी जारी किए।

शेष पृष्ठ 4 पर

अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह: रणनीतिक ख़ाका मजबूत रक्षा और आर्थिक लचीलेपन का आह्वान

श्री विजय पुरम, 4 सितंबर।

अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह हिंद–प्रशांत क्षेत्र में भारत की समुद्री रणनीति के एक महत्वपूर्ण घटक के रूप में लगातार उभर रहा है। इसकी भौगोलिक स्थिति निगरानी, रसद, रक्षा और क्षेत्रीय संपर्क के लिए महत्वपूर्ण लाभ प्रदान करती है।

द्वीपों के भविष्य की समीक्षा करने वाले एक रणनीतिक ख़ाके में कहा गया है कि भारत को एक संतुलित दृष्टिकोण अपनाने की आवश्यकता है, जिसमें राष्ट्रीय सुरक्षा आवश्यकताओं के साथ आर्थिक विकास और पर्यावरणीय उत्तरदायित्व को जोड़ा जाए। दस्तावेज़ में 81,000 करोड़ रुपये की ग्रेट निकोबार द्वीप विकास परियोजना पर विशेष ज़ोर दिया गया है और द्वीपसमूह में व्यापक परिवर्तन को भारत की क्षेत्रीय रणनीतिक स्थिति में संभावित बदलाव के रूप में वर्णित किया गया है।

एक रणनीतिक समुद्री स्थिति

दक्षिणी अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह हिंद महासागर को दक्षिण–पूर्व एशिया से जोड़ने वाले प्रमुख समुद्री मार्गों के निकट एक अत्यंत महत्वपूर्ण रणनीतिक स्थिति में स्थित है। रणनीतिक ख़ाके के अनुसार, सिक्स डिग्री चैनल और मलाका जलडमरूमध्य की ओर जाने वाले मार्गों के निकट ग्रेट निकोबार की स्थिति भारत को समुद्री निगरानी और रक्षा अभियानों के लिए एक महत्वपूर्ण आधार प्रदान कर सकती है।

दस्तावेज़ में ग्रेट निकोबार में प्रस्तावित 3,500 मीटर लंबे रनवे को भी प्रमुखता से रेखांकित किया गया है, जिसे रणनीतिक हवाई परिवहन और समुद्री निगरानी क्षमताओं को सहयोग प्रदान करने वाला माना गया है। ख़ाके के अनुसार, इस प्रकार का बुनियादी ढांचा एक स्थायी परिचालन उपस्थिति उपलब्ध करा सकता है, जिसकी उसी भौगोलिक स्थिति में मुख्यभूमि स्थित सुविधाएं बराबरी नहीं कर सकतीं।

एक अन्य प्रमुख घटक गलाथिया बे में प्रस्तावित अंतरराष्ट्रीय कंटेनर ट्रांसशिपमेंट टर्मिनल है। रणनीतिक ख़ाका इस क्षेत्र की गहरे पानी की विशेषताओं को रेखांकित करता है और मानता है कि यह सुविधा भारत की समुद्री रसद तथा अग्रिम आधार–स्थापना क्षमताओं को मजबूत करने की क्षमता रखती है।

हिंद–प्रशांत क्षेत्र में सुरक्षा संबंधी चिंताएं

रणनीतिक आकलन में प्रमुख क्षेत्रीय शक्तियों के बढ़ते सैन्य और बुनियादी ढांचे की मौजूदगी को भारत की द्वीप नीति के लिए एक महत्वपूर्ण विचार के रूप में चिन्हित किया गया है।

इसमें कहा गया है कि व्यापक हिंद–प्रशांत क्षेत्र में हो रहे विकास, जिसमें हिंद महासागर के आसपास की बुनियादी ढांचा गतिविधियां भी शामिल हैं, भारत के लिए यह सुनिश्चित करना आवश्यक बनाते हैं कि उसके रणनीतिक रूप से स्थित द्वीपीय क्षेत्र पर्याप्त रूप से जुड़े हुए, सुरक्षित और विकसित रहें।

इसलिए रणनीतिक ख़ाका मजबूत रक्षात्मक बुनियादी ढांचे की वकालत करता है, जिसमें सुदृढ़ विमानन सुविधाएं, नौसैनिक सहायता बुनियादी ढांचा और अन्य सुरक्षा प्रतिष्ठान शामिल हैं।

आर्थिक लाभ के साथ विकास

दस्तावेज़ में कहा गया है कि केवल सैन्य दृष्टिकोण एक लचीले और मजबूत द्वीपीय तंत्र के निर्माण के लिए पर्याप्त नहीं होगा।

इसमें विशेष रूप से कम प्रभाव वाले पर्यटन, लघु स्तर के उद्योगों, जहाज़ मरम्मत सेवाओं और कंटेनर ट्रांसशिपमेंट से संबंधित व्यवसायों सहित सुव्यवस्थित आर्थिक गतिविधियों का प्रस्ताव दिया गया है। ऐसी गतिविधियां संभावित रूप से रोज़गार के अवसर पैदा कर सकती हैं और क्षेत्र में रहने वाले समुदायों की आर्थिक नींव को मजबूत कर सकती हैं।

भूकंपीय लचीलेपन के लिए निर्माण

द्वीपों की भूवैज्ञानिक संवेदनशीलता को भी रणनीतिक ख़ाके में चिन्हित एक अन्य महत्वपूर्ण विचार के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

चूंकि अण्डमान तथा निकोबार क्षेत्र भूकंपीय रूप से सक्रिय क्षेत्र में स्थित है, इसलिए दस्तावेज़ में सिफारिश की गई है कि गलाथिया बे के आसपास प्रमुख बुनियादी ढांचे में ऐसे लचीले और गहरे नींव वाले अभियांत्रिकी उपायों को शामिल किया जाए, जो गंभीर भूकंपीय झटकों और संभावित सुनामी के प्रभावों से निपटने में सक्षम हों।

रणनीतिक ख़ाके में वितरित और मोबाइल रक्षा क्षमताओं के उपयोग का भी प्रस्ताव किया गया है। इसमें तर्क दिया गया है कि निगरानी प्रणालियों और मोबाइल संसाधनों का संयोजन व्यापक स्तर पर भूमि परिवर्तन पर तत्काल निर्भर हुए बिना रक्षा व्यवस्था को मजबूत कर सकता है।

तीन–तरफा संतुलन

रणनीतिक आकलन में अंततः अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के विकास को राष्ट्रीय सुरक्षा, आर्थिक स्थिरता और पारिस्थितिक संरक्षण से जुड़ी एक संतुलन प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

इसका केंद्रीय प्रस्ताव यह है कि भारत की द्वीप रणनीति को समुद्री सुरक्षा मजबूत करने के साथ–साथ एक व्यवहार्य स्थानीय अर्थव्यवस्था का निर्माण करना चाहिए और विकास प्रक्रिया में पर्यावरणीय सुरक्षा उपायों को भी शामिल करना चाहिए।

भारत के लिए चुनौती इसलिए केवल यह नहीं है कि द्वीपों का विकास किया जाना चाहिए या नहीं, बल्कि यह है कि ऐसा विकास किस प्रकार दीर्घकालिक रणनीतिक लचीलापन पैदा कर सकता है, बिना उन पारिस्थितिक तंत्रों को कमज़ोर किए जो इस द्वीपसमूह को विशिष्ट बनाते हैं।

इसके परिणामस्वरूप अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह केवल एक अग्रिम रक्षा स्थिति से कहीं अधिक बन सकता है। सावधानीपूर्वक योजना के साथ, इसमें एकीकृत समुद्री सुरक्षा, रसद और आर्थिक केंद्र के रूप में विकसित होने की क्षमता है–बशर्ते कि बुनियादी ढांचे का विस्तार, स्थानीय हित, आपदा लचीलापन और पर्यावरणीय संरक्षण एक साथ आगे बढ़ें। (स्रोत: ibgnews.com)

C M Y K

उप–विभागीय दंडाधिकारी न्यायालय, डिगलीपुर
उत्तर व मध्य अण्डमान ज़िला
फाइल संख्याः 9–12/एसडीएम/डीपी/2024/342

आदेश

(बीएनएसएस, 2023 की धारा 163 के अंतर्गत)

चूँकि, कार्यपालक अभियंता, एपीडब्ल्यूडी, निर्माण प्रभाग, डिगलीपुर द्वारा पत्र संख्या एसएच एंड डीबी/सीडी (1296)/डीपी/2026–27/3809 दिनांक 31.08.2026 के माध्यम से सूचित किया गया है कि राज्य राजमार्ग–14 (एसएच–14) पर नबाग्राम में स्थित स्टील बेली ब्रिज की मरम्मत का कार्य, जो कलारा जंक्शन से 3.20 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, समझौता संख्या 156/सीडी/डीपी/2025–26 के तहत एक एजेंसी को सौंपा गया है,

और चूँकि, राज्य राजमार्ग–14 (एसएच–14) पर नबाग्राम में स्थित उक्त स्टील बेली ब्रिज कालीघाट एवं रामनगर क्षेत्र के लिए एकमात्र संपर्क मार्ग है,

और चूँकि, कार्यपालक अभियंता, निर्माण प्रभाग, एपीडब्ल्यूडी, डिगलीपुर ने उपर्युक्त पत्र के माध्यम से अधोहस्ताक्षरी को सूचित किया है कि बेली ब्रिज की मरम्मत का कार्य 04.09.2024 से 08.09.2024 तक किया जाना निर्धारित है,

और चूँकि, कार्यपालक अभियंता, निर्माण प्रभाग, एपीडब्ल्यूडी, डिगलीपुर ने उपर्युक्त पत्र के माध्यम से यह भी सूचित किया है कि पुल के दोनों ओर स्थित बस्तियाँ जेई कार्यालय, कलारा के समीप से माध्यग्राम चौक तक जाने वाले वैकल्पिक मार्ग से जुड़ी हुई हैं। अतः पुल के बंद रहने की अवधि के दौरान यातायात आवागमन पर प्रतिकूल प्रभाव नहीं पड़ेगा।

अतः अब, इसलिए

मैं, संतोष प्रकाश, दानिक्स, उप–विभागीय दंडाधिकारी, डिगलीपुर, बीएनएसएस, 2023 की धारा 163 के अंतर्गत मुझे प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, एतद्द्वारा 04.09.2026 से 08.09.2026 तक पाँच दिनों की अवधि के लिए नबाग्राम में एसएच–14 पर स्थित बेली ब्रिज से होकर गुजरने वाले मार्ग को बंद करने का आदेश जारी करता हूँ।

साथ ही, नबाग्राम ग्राम में निवास करने वाले किसी भी व्यक्ति तथा आम जनता अथवा किसी भी वाहन को सार्वजनिक सुरक्षा के हित में एवं तत्काल मरम्मत कार्य को सुचारु रूप से संपन्न कराने के उद्देश्य से एसएच–14 स्थित नबाग्राम बेली ब्रिज का उपयोग करने से प्रतिबंधित किया जाता है।

यह भी आदेशित किया जाता है कि, उक्त बंदी की अवधि के दौरान आम जनता एवं सभी वाहनों को ऊपर उल्लिखित वैकल्पिक मार्ग का उपयोग करने की सलाह दी जाती है।

कार्यपालक अभियंता, एपीडब्ल्यूडी, डिगलीपुर को निर्देशित किया जाता है कि निर्धारित अवधि के भीतर मरम्मत कार्य पूर्ण करवाना सुनिश्चित करें तथा मार्ग/पुल को पुनः यातायात के लिए खोले जाने की सूचना तत्काल उपलब्ध कराएँ।

उप पुलिस अधीक्षक, डिगलीपुर को इस आदेश के अनुपालन को सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक कार्रवाई करने के लिए निर्देशित किया जाता है।

मेरे हस्ताक्षर एवं न्यायालय की मुहर के तहत यह आदेश 03 सितंबर, 2026 को जारी किया गया।

(संतोष प्रकाश) दानिक्स
उप–विभागीय दंडाधिकारी
डिगलीपुर

एमबीबीएस प्रवेश काउंसलिंग का दूसरा चरण 8 सितंबर को

श्री विजय पुरम, 4 सितंबर। अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह चिकित्सा संस्थान (अनिम्स) ने घोषणा की है कि शैक्षणिक सत्र 2026–27 के लिए एमबीबीएस प्रवेश काउंसलिंग के दूसरे चरण का आयोजन 8 सितंबर, 2026 को सुबह 9 बजे 'अनिम्स' के नए परिसर, कार्बाइंस कोव, श्री विजय पुरम स्थित लाइब्रेरी ब्लॉक भवन में किया जाएगा। एमबीबीएस प्रवेश काउंसलिंग के दूसरे चरण में भाग लेने वाले पात्र अभ्यर्थियों की सूची 'अनिम्स' की आधिकारिक वेबसाइट www.aniims.andamannicobar.gov.in तथा कॉमन कॉलेज एडमिशन पोर्टल https://collegeadmission.andamannicobar.gov.in पर अपलोड कर दी गई है। प्राप्त विज्ञप्ति में सभी पात्र अभ्यर्थियों को सलाह दी गई है कि वे उपर्युक्त वेबसाइटों पर जाएं और संस्थान द्वारा अधिसूचित कार्यक्रम एवं निर्देशों के अनुसार काउंसलिंग स्थल पर उपस्थित हों। अभ्यर्थियों को यह भी सलाह दी गई है कि काउंसलिंग के समय सत्यापन के लिए सभी आवश्यक मूल दस्तावेज़ एवं प्रमाण–पत्र, साथ ही अन्य आवश्यक दस्तावेज़ अपने साथ लेकर आएं।

अवैध शराब और वन्यजीव अपराध के खिलाफ उत्तर व मध्य अण्डमान पुलिस ने कार्रवाई तेज की

मायाबंदर, 4 सितंबर। उत्तर व मध्य अण्डमान पुलिस ने अवैध गतिविधियों के खिलाफ अपने निरंतर प्रवर्तन अभियान को जारी रखते हुए हाल के दिनों में तीन महत्वपूर्ण कार्रवाइयां की हैं।

31 अगस्त, 2026 को रंगत थाना के अंतर्गत ओपी बकुलतला की टीम ने कालसी में जंगल की तलाशी ली और लगभग 165 लीटर अवैध लेहान बरामद किया, जिसे नियमानुसार बाद में नष्ट कर दिया गया। इसी प्रकार, 3 सितम्बर, 2026 को बिलिग्राउंड थाना के अंतर्गत ओपी बदाम नाला की टीम ने गोविंदापुर के घने वन क्षेत्र में तलाशी अभियान चलाया और लगभग 200 लीटर अवैध लेहान बरामद किया, जिसे भी नियमानुसार मौके पर ही नष्ट कर दिया गया।

एक अन्य कार्रवाई में, 3 सितम्बर, 2026 को ओपी बदाम नाला की टीम ने बसंतीपुर में एक व्यक्ति को रोका और उसके कब्ज़े से लगभग 7 किलोग्राम संदिग्ध काकड़ (बार्किंग डियर) का मांस बरामद किया। उक्त व्यक्ति को ज़ब्त मांस सहित संबंधित प्रावधानों के तहत आवश्यक कानूनी कार्रवाई के लिए वन विभाग को सौंप दिया गया। उत्तर व मध्य अण्डमान के पुलिस अधीक्षक से प्राप्त प्रेस विज्ञप्ति में आम जनता से अनुरोध किया गया है कि किसी भी अपराध या अवैध गतिविधि से संबंधित विश्वसनीय जानकारी अपने निकटतम पुलिस थाना अथवा 100 या 112 के माध्यम से साझा करें। सूचनादाताओं की पहचान गोपनीय रखी जाएगी और कार्रवाई योग्य सूचना देने वालों को उचित पुरस्कार प्रदान किया जाएगा।

एचआईवी/एड्स के संबंध में जागरूकता फैलाने के लिए रेड रन आयोजित

श्री विजय पुरम, 4 सितंबर। यहां के एएनएम प्रशिक्षण विद्यालय और स्कूल ऑफ नर्सिंग के विद्यार्थियों के बीच एचआईवी/एड्स के संबंध में जागरूकता पैदा करने के उद्देश्य से 4 सितंबर, 2026 को रेड रन कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम को सुबह 6 बजे सेल्यूलर जेल से स्कूल ऑफ नर्सिंग की उप–प्रधानाचार्य श्रीमती हप्सा बीबी ने झंडी दिखाकर रवाना किया। इस अवसर पर एएनएम प्रशिक्षण विद्यालय की प्रधानाचार्य श्रीमती बिंसी वी. कुरुविला तथा एएनएम प्रशिक्षण विद्यालय और स्कूल ऑफ नर्सिंग के शिक्षण संकाय के सदस्य उपस्थित थे।

यहां प्राप्त प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया है कि रेड रन सेल्यूलर जेल से शुरू होकर फ्लैग प्वाइंट और साउथ प्वाइंट से गुजरते हुए उसी स्थान पर आकर संपन्न हुआ। कार्यक्रम में दोनों संस्थानों के विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक प्रतिक्रिया दी और सक्रिय रूप से भाग लिया, जो जागरूकता फैलाने तथा एचआईवी व एड्स की रोकथाम को बढ़ावा देने के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को दर्शाता है। रेड रन में पुरूष वर्ग में अभिजीत सिंह, संदीप घरामी, निखिल कच्छप को तथा महिला वर्ग में शिखा मिस्त्री, सेख साहिला, रेशमा टोप्पो को क्रमशः पहला तीन स्थान प्राप्त हुआ, जबकि एएनएम प्रशिक्षण विद्यालय के अंतर्गत महिला वर्ग में तनुका वैष्णव, मरियम खातून, अंजलि एक्का को पहला, दूसरा और तीसरा स्थान मिला।

अवैध गांजा की खेती के खिलाफ कार्रवाई : कदमतला में गांजे का पौधा ज़ब्त

मायाबंदर, 4 सितंबर। उत्तर व मध्य अण्डमान ज़िला पुलिस द्वारा मादक पदार्थों की तस्करी के खिलाफ चलाए जा रहे निरंतर अभियान को तेज करते हुए, कदमतला थाना ने 3 सितम्बर, 2026 को कदमतला स्थित एक आवासीय परिसर में तलाशी अभियान चलाया, जिसके दौरान लगभग 100 ग्राम वजन का एक उगाया गया गांजे का पौधा बरामद कर ज़ब्त किया गया।

आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया तथा एनडीपीएस अधिनियम की संबंधित धाराओं के तहत कदमतला थाना में मामला दर्ज़ किया गया है। मामले की आगे की जांच जारी है। उत्तर व मध्य अण्डमान पुलिस मादक पदार्थों से मुक्त ज़िला बनाए रखने तथा मादक पदार्थों की अवैध खेती और तस्करी के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने के लिए प्रतिबद्ध है।

उत्तर व मध्य अण्डमान के पुलिस अधीक्षक से प्राप्त प्रेस विज्ञप्ति में बताया गया है कि यह कार्रवाई कदमतला थाना के एसआई पी. आर. शाइन नायर, थाना प्रभारी द्वारा रंगत के एसडीपीओ, श्री महेंद्र सिंह चरण, दानिप्स, के प्रत्यक्ष पर्यवेक्षण में की गई। पुलिस ने आम लोगों से इस निरंतर अभियान में सहयोग करने की अपील की है। किसी भी अवैध गतिविधि की सूचना निकटतम पुलिस थाना अथवा 100 और 112 हेल्पलाइन के माध्यम से दें। सभी सूचनादाताओं की पहचान पूरी तरह गोपनीय रखी जाएगी और कार्रवाई योग्य सूचना देने वालों को उचित पुरस्कार प्रदान किया जाएगा।

रंगाचांग में बकरी पालन पर किसान खेत पाठशाला संचालित

श्री विजय पुरम, 4 सितंबर। पशुपालन एवं पशु चिकित्सा सेवा विभाग द्वारा पशु चिकित्सा औषधालय, रंगाचांग, दक्षिण अण्डमान के माध्यम से राष्ट्रीय पशुधन मिशन के तहत 3 सितंबर, 2026 को रंगाचांग–4 निवासी श्री आनंद राव के खेत पर बकरी पालन विषय पर किसान खेत पाठशाला का आयोजन किया गया। श्री एन. कार्तिक, उप–प्रधान ने मुख्य अतिथि के रूप में कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई और प्रशिक्षण में प्रतिभागी के रूप में भी हिस्सा लिया। कार्यक्रम के दौरान राष्ट्रीय पशुधन मिशन के उद्यमिता विकास कार्यक्रम पर प्रकाश डाला गया। वरिष्ठ पशु चिकित्सा अधिकारी द्वारा पशुधन बीमा योजना, बकरियों में कृत्रिम गर्भाधान तथा किसान क्रेडिट कार्ड (केसीसी) जैसी अन्य महत्वपूर्ण योजनाओं के बारे में भी जानकारी दी गई। प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार प्रशिक्षण में वैज्ञानिक बकरी पालन पद्धतियों से संबंधित विभिन्न विषयों को शामिल किया गया। वरिष्ठ पशु चिकित्सा अधिकारी, पशु चिकित्सा औषधालय, रंगाचांग एवं उनकी टीम द्वारा खुर की कटाई तथा कृमिनाशन जैसी प्रक्रियाओं का व्यावहारिक प्रदर्शन किया गया।

उत्तर व मध्य अण्डमान ज़िले की ——————————पृष्ठ 1 का शेष

बैठक में विशेष आमंत्रित सदस्यों के रूप में शामिल ग्राम पंचायत प्रधानों द्वारा उठाए गए विभिन्न विकास संबंधी मुद्दों एवं आवश्यकताओं पर भी विचार किया गया। समिति ने संबंधित विभागों को इन मामलों पर उचित एवं समयबद्ध कार्रवाई सुनिश्चित करने पर ज़ोर दिया।

उत्तर व मध्य अण्डमान के उपायुक्त से प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार इस अवसर पर सांसद स्थानीय क्षेत्र विकास योजना (एमपीएलएडी) के तहत खरीदे गए पिकअप वाहनों को ग्राम पंचायत सबरी एवं ग्राम पंचायत शिवपुरम को सौंपने के लिए हस्तांतरण समारोह भी आयोजित किया गया। इन वाहनों का उपयोग संबंधित ग्राम पंचायतों में ठोस अपशिष्ट प्रबंधन (एसडब्ल्यूएम) गतिविधियों को सुदृढ़ एवं सुगम बनाने के लिए किया जाएगा।

माननीय अध्यक्ष ने विकास कार्यों की निरंतर निगरानी, पारदर्शिता एवं जवाबदेही सुनिश्चित करने तथा विकास परियोजनाओं को शीघ्र पूरा करने की आवश्यकता पर बल दिया। उपायुक्त ने समिति को आश्वस्त किया कि बैठक में दिए गए सभी दिशा–निर्देशों एवं सुझावों पर संबंधित विभागों द्वारा समयबद्ध रूप से आवश्यक कार्रवाई सुनिश्चित की जाएगी तथा उनकी अनुपालना की नियमित समीक्षा की जाएगी।

बैठक का समापन माननीय अध्यक्ष, समिति के सदस्यों एवं सभी संबंधित अधिकारियों के प्रति उनके बहुमूल्य मार्गदर्शन और सक्रिय सहभागिता के लिए धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

उन्नत पशुपालन पद्धतियों को अपनाने के लिए किसानों के खेत पर प्रदर्शन

श्री विजय पुरम, 4 सितंबर। केंद्रशासित प्रदेश कृषि प्रौद्योगिकी प्रबंधन एजेंसी (यूटी–एटीएमए) योजना के तहत पशुपालन एवं पशु चिकित्सा सेवा विभाग द्वारा 31 अगस्त, 2026 को उत्तरा गांव की कृषक श्रीमती निर्मला दास के खेत पर एक प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का आयोजन पशुपालकों को उन्नत पशुपालन पद्धतियों को अपनाने के लिए व्यावहारिक, खेत–स्तरीय प्रशिक्षण एवं तकनीकी मार्गदर्शन प्रदान करने के उद्देश्य से किया गया था। प्रदर्शन के दौरान सहभागी किसानों को वैज्ञानिक पशुधन प्रबंधन, बेहतर आहार पद्धतियों तथा पशुओं के स्वास्थ्य और उत्पादकता में सुधार के लिए समय पर पशु चिकित्सा हस्तक्षेप के महत्व के बारे में जागरूक किया गया। प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार कार्यक्रम में उपस्थित किसानों ने तकनीकी दल के साथ सक्रिय रूप से संवाद किया तथा खेत स्तर पर प्रदर्शित की गई पद्धतियों को अपनाने में गहरी रुचि दिखाई। पशुपालन एवं पशु चिकित्सा सेवा विभाग अण्डमान तथा निकोबार द्वीपसमूह के किसानों के लाभ के लिए इसी प्रकार के कार्यक्रम आयोजित करने के लिए प्रतिबद्ध है।

शिक्षक दिवस समारोह के तहत सीआरसी स्तर पर वॉलीबॉल एवं रस्साकशी प्रतियोगिताएं हुईं

श्री विजय पुरम, 4 सितंबर। शिक्षक दिवस समारोह, 2026 के एक भाग के रूप में पुरुष एवं महिला वर्ग के लिए सीआरसी स्तर की वॉलीबॉल प्रतियोगिता एवं रस्साकशी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में समुदाय की सक्रिय भागीदारी, उत्साहपूर्ण सहभागिता तथा शिक्षण एवं गैर–शिक्षण कर्मचारियों के बीच खेल और खेल भावना को बढ़ावा देने के प्रति मजबूत प्रोत्साहन देखने को मिला। प्राप्त विज्ञप्ति के अनुसार वॉलीबॉल (पुरुष) वर्ग में सीआरसी जीएसएसएस मोहनपुरा ने सीआरसी जीएसएसएस गाराचरामा को पराजित किया तथा वॉलीबॉल (महिला) वर्ग में सीआरसी जीएसएसएस मॉडल अबर्डीन ने सीआरसी जीएसएसएस मंगलूटान को पराजित किया। इसी प्रकार, रस्साकशी (पुरुष) वर्ग में सीआरसी जीएसएसएस मॉडल अबर्डीन ने सीआरसी जीएसएसएस मोहनपुरा को तथा रस्साकशी (महिला) वर्ग में सीआरसी जीएसएसएस मॉडल अबर्डीन ने सीआरसी जीएसएसएस मोहनपुरा को पराजित किया। उत्कृष्ट प्रदर्शन के सम्मान में विभिन्न सीआरसी का प्रतिनिधित्व करने वाली विजेता एवं उप विजेता टीमों को ट्रॉफियां एवं पदक वितरित किए गए। उप शिक्षा अधिकारी, दक्षिण अण्डमान ने खेल के क्षेत्र में उनके बहुमूल्य योगदान के सम्मान में शारीरिक शिक्षा संकाय के सदस्यों को प्रशंसा प्रमाण–पत्र एवं स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया।

सूचना, प्रचार और पर्यटन निदेशालय द्वारा प्रकाशित तथा प्रबन्धक, राजकीय मुद्रणालय द्वारा मुद्रित, वितरण तथा विज्ञापन के लिए फोन–229465, प्रधान सम्पादक (प्रभारी) पी. कैरल डी. सोणी
e-mail:dweepsamachar@gmail.com

ई–निविदा सूचना

कार्यपालक अभियंता, पंचायती राज संस्थान, दक्षिण अण्डमान मण्डल– I, श्री विजय पुरम, दक्षिण अण्डमान, प्रधान, ग्राम पंचायत, रवींद्र नगर, लिटिल अण्डमान की ओर से, निम्नलिखित कार्यों के लिए उचित श्रेणी के योग्य व अनुभवी ठेकेदारो से मुहरबंद मद दर (के.लो.नि.वि.–8 के प्रपत्र के रूप में) आमंत्रित करते है।

एन. आई. टी. संख्या : क.अ./पी आर आई/एस ए डी– I/आर आर (सीसीए)/2026–27/60

कार्य का नाम : लिटिल अण्डमान, रवींद्र नगर ग्राम पंचायत के अंतर्गत रवींद्र नगर वार्ड संख्या 05 में गाँव की सड़क से तरूण सरदार के घर तक सी सी रोड का निर्माण कार्य। (संशोधित अनुमान) (पुनः निविदा)।

अनुमानित लागत : रु. 7,23,110/–, धरोहर राशि : रु. 14,462/–, कार्य समाप्ति की अवधि : (03) तीन माह।

निविदा शुल्क : रु. 500/–, बोली प्रस्तुत करने की अंतिम तिथि : 22/09/2026 के अपराह्न 3.00 बजे तक।

निविदा प्रपत्र और अन्य विवरण वेबसाइट https://eprocure.andamannicobar.gov.in से प्राप्त किए जा सकते हैं।

टेंडर आई डी : 2026_RDPRI_23609_2

कार्यपालक अभियंता,
पंचायती राज संस्थान, दक्षिण अण्डमान मण्डल– I,
जंगलीघाट, श्री विजय पुरम, दक्षिण अण्डमान

‘विशेष अभियान–3’ के दौरान लंबे समय से लंबित 2,306 पेंशन संबंधी शिकायतों का समाधान किया गया

नई दिल्ली, 04 सितम्बर। पेंशन और पेंशनभोगी कल्याण विभाग (डीओपीपीडब्ल्यू) केन्द्र सरकार के पेंशनभोगियों के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है। इस प्रतिबद्धता में पेंशनभोगियों की शिकायतों का सार्थक और आसानी से समाधान करना भी शामिल है। इसके लिए, 2024 से हर वर्ष विशेष अभियान आयोजित किए जा रहे हैं। इस अभियान के तीसरे संस्करण में, विभाग ने लंबे समय से लंबित पेंशन संबंधी शिकायतों/दावों/समस्याओं के समय पर और गुणवत्तापूर्ण समाधान हेतु 7 जुलाई, 2026 को ‘विशेष अभियान 3’ शुरू किया। इस अभियान में तैयारी चरण व कार्यान्वयन चरण शामिल था और यह 31 अगस्त, 2026 को संपन्न हुआ।

तैयारी चरण के दौरान, सभी मंत्रालयों, विभागों और उनसे जुड़े या उनके अधीनस्थ कार्यालयों को ऑनलाइन एवं प्रत्यक्ष, दोनों तरीकों से मिली लंबे समय से लंबित शिकायतों, दावों और समस्याओं की पहचान करने का निर्देश दिया गया। विभिन्न मंत्रालयों और विभागों ने इस चरण के तहत 1,062 लक्षित मामलों की पहचान की। कार्यान्वयन चरण के दौरान, विभाग ने इन मामलों के समाधान हेतु संबंधित मंत्रालयों/विभागों के साथ सक्रिय रूप से समन्वय किया। इस अभियान के बीच में दो समीक्षा बैठकें की गईं और इन मामलों के लंबित होने की स्थिति की नियमित रूप से जानकारी ली गई।

गुरु ब्रह्मा

सदियों की है यह अमर कहानी,
हर शिष्य की है यह जुबानी।
युगों से महकती उनकी वाणी,
गुरु बिन अधूरी हर जिंदगानी।
कागज़, कलम और विद्यार्थी की कुंजी,
यही गुरुओं के जीवन की अमूल्य पूँजी।
ज्ञान की विरासत को अंतिम साँसों तक बाँटने की निपुणता,
उनके उकेरे शिलालेख रच देते कई नई सभ्यता।
उनकी चली हुई पगडंडी है जीवन की पद्धति,
उनकी खींची हुई लकीरें मानव आचरण की प्रवृत्ति।
उनका प्रशिक्षण आँधियों में भी लौ जलाए रखने की युक्ति,
उनके नुस्खे ज़माने के चोटिल मानस को देते निवृत्ति।
उनके छात्र होने पर है अभिमान,
उनसे तपकर हासिल किया यह स्वाभिमान।
बुलंदियों को छूकर भी मुड़कर देखें वहाँ के कीर्तिमान,
गुरु ही हर सफलता की नींव का एकमात्र प्रमाण।
मोम अंधेरे को मिटाकर स्वयं मिट जाती है,
सीढ़ी मंज़िल दिखाकर वहीं खड़ी रह जाती है।
वृक्ष गिरने से पहले हज़ारों बीज बो जाता है,
दीया जले तो उजाला, बुझे तो काजल बन जाता है।

–एस. सत्यन,वरिष्ठ शिक्षक (अंग्रेजी),
शिक्षा निदेशालय, श्री विजय पुरम

अंतरराष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान ओलंपियाड में 9 पदकों के साथ सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले स्कूली बच्चे सम्मानित

नई दिल्ली, 04 सितम्बर। पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय के केंद्रीय मंत्री (स्वतंत्र प्रभार), डॉ. जीतेंद्र सिंह ने पृथ्वी भवन, लोधी रोड, नई दिल्ली में आयोजित एक विशेष सराहना और प्रोत्साहन बैठक में 19वें अंतरराष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान ओलंपियाड (पैंट) 2026 के विजेता, प्रतिभाशाली ‘टीम इंडिया स्कूल बच्चों’ को सम्मानित किया ।

इस असाधारण उपलब्धि की सराहना करते हुए, डॉ. जीतेंद्र सिंह ने इन युवा उपलब्धिधारकों पर अत्यंत गर्व व्यक्त किया और विजेताओं, उनके गर्वित माता–पिता और उनके संबंधित विद्यालयों को राष्ट्र को वैश्विक सम्मान दिलाने के लिए बधाई दी। मंत्रालय की दृष्टि को रेखांकित करते हुए, केंद्रीय मंत्री ने कहा कि सरकार युवा–केंद्रित आउटरीच कार्यक्रमों के माध्यम से युवाओं को सशक्त बनाने, उनके मौलिक वैज्ञानिक सोच को बढ़ावा देने और युवा मन को पृथ्वी प्रणाली विज्ञान की खोज के लिए प्रोत्साहित करने के प्रति गहराई से प्रतिबद्ध है।

भारतीय छात्र प्रतिनिधियों ने 20 से 27 अगस्त 2026 तक इटली के तुरिन में अंतरराष्ट्रीय भूविज्ञान संगठन (International Geoscience Organisation) के तत्वावधान में आयोजित 19वें अंतरराष्ट्रीय पृथ्वी विज्ञान ओलंपियाड में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया।

39 देशों के प्रतिभागियों के बीच प्रतिस्पर्धा करते हुए, टीम इंडिया ने लिखित और व्यावहारिक परीक्षाओं, अंतरराष्ट्रीय टीम फील्ड जांच (ITFI), और पृथ्वी विज्ञान परियोजना (ESP) की श्रेणियों में कुल नौ पदक– जिनमें 4 स्वर्ण, 3 रजत और 2 कांस्य पदक शामिल हैं– जीतकर एक ऐतिहासिक उपलब्धि हासिल की।

देश का नाम रोशन करने वाले उत्कृष्ट पदक विजेता इस प्रकार हैं:

सौमिक मंडल (डीएवी मॉडल स्कूल, दुर्गापुर, पश्चिम बंगाल) : 2 स्वर्ण, 1 रजत (39 देशों के बीच समग्र वैश्विक रैंकिंग में तीसरा स्थान प्राप्त किया)।

एरन मैती (डीएवी मॉडल स्कूल, आईआईटी–खड़गपुर,

पश्चिम बंगाल) : 1 स्वर्ण, 1 कांस्य।

ऋद्धि रंजन (ज्ञान अस्थली इंटरनेशनल स्कूल, पटना, बिहार) : 1 स्वर्ण, 1 रजत।

मोहम्मद एहतेशाम रिज़वी (जवाहर नवोदय विद्यालय, बिहार) : 1 रजत, 1 कांस्य।

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय (MoES) के सचिव, डॉ. टी. श्रीनिवास कुमार ने भी इस दल की सराहना में भाग लिया और प्रतियोगिता के इतिहास में भारत के सर्वोच्च पदक संख्या हासिल करने के लिए छात्रों और मार्गदर्शकों की प्रशंसा की।

प्रतिष्ठित ओलंपियाड में भागीदारी से पहले कठोर राष्ट्रीय चयन और प्रशिक्षण प्रक्रिया से अंतरराष्ट्रीय जीत तक की यह यात्रा संरचित राष्ट्रीय समर्थन को दर्शाती है।

पृथ्वी विज्ञान मंत्रालय द्वारा अपने आउटरीच और जागरूकता कार्यक्रम के तहत पूर्णतः समर्थित, पृथ्वी विज्ञान ओलंपियाड की शुरुआत एक अखिल भारत स्तर की परीक्षा से होती है–जो भूवैज्ञानिक सोसाइटी ऑफ इंडिया द्वारा सुविधाजनक की गई–जिसमें लगभग 17,800 छात्रों ने देश भर के 500 केंद्रों पर भाग लिया।

शीर्ष 25 मेधावी छात्रों ने जून 2026 में गुजरात के वडोदरा स्थित एम.एस. यूनिवर्सिटी में तीन सप्ताह के गहन प्रशिक्षण शिविर में भाग लिया, जिसे केंद्रीय मंत्री की इच्छा के अनुसार देश के विभिन्न क्षेत्रों में शिविर स्थानों को घुमाने के उद्देश्य से आयोजित किया गया था।

जिस टीचर से पूरी क्लास डरती थी, बड़े होकर वही क्यों आते हैं सबसे ज्यादा याद? साइकोलॉजी में छिपा है जवाब

नई दिल्ली, 04 सितम्बर। 5 सितंबर यानी शिक्षक दिवस सिर्फ एक तारीख नहीं, बल्कि स्कूल की खट्टी–मीठी यादों का पिटारा है। यूं तो इस दिन हमें अपने कई टीचर याद आते हैं, लेकिन जरा गौर कीजिए, आज भी जेहन में सबसे पहले उसी टीचर का नाम आता है, जिनकी डांट से पूरी क्लास थर–थर कांपती थी।

इंसानी दिमाग की बनावट ही कुछ ऐसी है कि वह उन पलों को कभी नहीं भूलता, जब हम बहुत ज्यादा भावुक, डरे हुए या सतर्क होते हैं। जब वो स्ट्रिक्ट टीचर क्लास में एंट्री लेते थे, तो हमारा दिमाग एकदम अलर्ट मोड पर चला जाता था। उस डर और घबराहट के कारण हमारा फोकस बहुत ज्यादा बढ़ जाता था। यही वजह है कि उनकी क्लास में पढ़ाई गई बातें और उनके कहे गए शब्द हमारे दिमाग की स्थायी याददाश्त में हमेशा के लिए छप गए।

सख्त टीचर कभी भी आपको औसत काम के साथ खुश नहीं होने देते थे। वो जानते थे कि आपके अंदर कितनी क्षमता है और वो उसे बाहर निकालना चाहते थे। जब वो हमें डांटते थे, तो दरअसल वो हमारी कमियों और आलस को दूर कर रहे होते थे। उस उम्र में हमें उनका वो गुस्सा बहुत बुरा लगता था, लेकिन आज हमें समझ आता है कि सुनार की तरह हमें पीट–पीटकर एक खूबसूरत गहना बनाने का काम असल में उन्हीं टीचर्स ने किया था।

जो टीचर दिन भर हंसते–मुस्कुराते रहते हैं, उनकी तारीफ सुनना अच्छा तो लगता है, लेकिन वो आम बात होती है। वहीं दूसरी तरफ, इंसान का मनोविज्ञान कहता है

कि जो चीज बहुत मुश्किल से मिलती है, दिमाग उसे सबसे कीमती मानता है। जब एक सख्त टीचर अचानक हमारी किसी अच्छी बात पर मुस्कुरा कर ‘वेरी गुड’ कह देता था, तो दिमाग में खुशी का केमिकल बहुत तेजी से रिलीज होता था। वो खुशी इतनी सच्ची और बड़ी होती थी कि हम उसे जिंदगी भर नहीं भूल पाते।

वक्त बीतने के साथ हमें ये एहसास हो ही जाता है कि उन टीचर्स की डांट में कोई नफरत नहीं, बल्कि हमारी फिक्र छिपी थी। वो बाहर से सख्त जरूर थे, लेकिन उनका दिल हमेशा हमारे भले के लिए धड़कता था। इसलिए इस टीचर्स डे अगर मुमकिन हो, तो अपने उन स्ट्रिक्ट सर या मैम को जरूर याद करें। उन्हें फोन करें या मैसेज भेजकर बस इतना बताएं कि, आपकी उस डांट की वजह से ही आज मेरी जिंदगी सही रास्ते पर है।

इतिहास के पन्नों में 05 सितम्बरः लोगों की जान बचाने के लिए शहीद हुई भारत की बहादुर बेटी नीरजा भनोट

नई दिल्ली, 04 सितम्बर। भारतीय इतिहास में 05 सितंबर की तारीख नीरजा भनोट के अदम्य साहस और बलिदान के लिए याद किया जाता है। वर्ष 1986 में महज 22 वर्ष की नीरजा ने पैन एम फ्लाइट–73 में सैकड़ों यात्रियों की जान बचाने के लिए अपनी जिंदगी कुर्बान कर दी। मुंबई से न्यूयॉर्क जा रही यह उड़ान कराची के जिन्ना अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर रुकी थी। इसी दौरान चार हथियारबंद आतंकियों ने विमान पर कब्जा कर लिया। पायलटों के विमान से निकल जाने के बाद वरिष्ठ फ्लाइट पर्सर नीरजा ने यात्रियों की सुरक्षा की जिम्मेदारी संभाली।

आतंकियों ने अमेरिकी नागरिकों की पहचान के लिए सभी यात्रियों के पासपोर्ट जमा करने को कहा। नीरजा ने सूझ–बूझ दिखाते हुए अमेरिकी यात्रियों के पासपोर्ट छिपा दिए। इससे आतंकियों की योजना विफल हो गई। करीब 17 घंटे तक चले घटनाक्रम के दौरान नीरजा ने आपातकालीन दरवाजा खोलकर यात्रियों को बाहर निकालने में मदद की। वह बड़ी संख्या में यात्रियों को सुरक्षित निकालने में सफल रहीं। बच्चों को बचाने की कोशिश के दौरान आतंकियों की गोलियों का निशाना बनकर नीरजा शहीद हो गईं।

उनके अदम्य साहस के लिए भारत सरकार ने उन्हें मरणोपरांत अशोक चक्र से सम्मानित किया। पाकिस्तान ने तमगा–ए–इंसानियत और अमेरिका ने भी उनकी वीरता के लिए सम्मान दिया। नीरजा की कहानी आज भी साहस और मानवता की मिसाल है।

महत्वपूर्ण घटनाचक्र–1666– लंदन में लगी भीषण आग में 13,200 घर क्षतिग्रस्त हो गये और आठ लोगों की मौत हो गयी।

1798– फ्रांस में अनिवार्य सैन्य सेवा कानून प्रभाव में आया।

1839– चीन में पहला अफ़ीम युद्ध शुरू हुआ।

1914 – ब्रिटेन, फ्रांस, बेल्जियम और रूस के बीच लंदन समझौता हुआ।

1944 – ब्रिटिश प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल ने अपनी स्कॉटलैंड यात्रा शुरू की।

1960 – अमेरिकी मुक्केबाज मोहम्मद अली ने रोम ओलिंपिक्स में 175–पाउंड कैटेगरी में गोल्ड मेडल जीता। इसके बाद

उन्होंने प्रोफेशनल करियर चुना और नामी मुक्केबाज बन गए।

1972 – म्यूनिख ओलंपिक के दौरान फिलीस्तीनी समूह ब्लैक सितम्बर ने 11 इजराइली एथलीटों को बंधक बना लिया और बाद में उनकी हत्या कर दी।

1977 – नासा ने वोएजर–1 प्रोब को लॉन्च किया। यह आज तक पृथ्वी से सबसे दूर भेजी गई मानव निर्मित वस्तु है।

1980 – दुनिया की सबसे लंबी टनल शुरू हुई। स्विट्ज़रलैंड की सेंट गोथार्ड टनल 10.14 मील (16.22 किमी) लंबी है।

1984 – स्पेस शटल डिस्कवरी पहली अंतरिक्ष यात्रा से लौटा।

1991 – नेल्सन मंडेला अफ्रीकी नेशनल कांग्रेस के अध्यक्ष चुने गये।

1997 – अंतर्राष्ट्रीय ओलम्पिक समिति ने सन 2004 में होने वाले ग्रीष्म ओलम्पिक खेलों का आयोजन एथेन्स में कराने का निश्चय किया।

2001 – फिजी में महेन्द्र चौधरी, जार्ज स्पेट और लाइसेनिया कराये संसद हेतु चुने गये।

2005 – मंडला एयरलाइंस का विमान 091 इंडोनेशिया में सुमात्रा के एक आवासीय क्षेत्र में दुर्घटनाग्रस्त हो गया, जिससे उसमें सवार 104 लोगों के अलावा आवासीय क्षेत्र के 39 लोगों की मौत हो गई।

2019 – हैदराबाद में इरामट्टी मंगम्मा 74 साल की उम्र में जुड़वा बच्चों को जन्म देने वाली दुनिया की सबसे उम्रदराज मां बनीं।

समुद्र का जलस्तर बढ़ने से कोलकाता और मुंबई के लाखों लोग हो सकते हैं प्रभावितः यूएन

नई दिल्ली, 04 सितम्बर। संयुक्त राष्ट्र महासचिव एंटोनियो गुटेरेस की एक रिपोर्ट में चेतावनी दी गई है कि समुद्र का जलस्तर बढ़ने से कोलकाता और मुंबई में रह रहे लाखों लोग बुरी तरह प्रभावित हो सकते हैं। सोमवार को जारी रिपोर्ट में ग्लोबल वार्मिंग की वजह से समुद्र का जलस्तर बढ़ने के असर को लेकर कई गंभीर चेतावनियां दी गई हैं।

पैसिफिक आइलैंड्स फोरम लीडर्स की 55वीं बैठक में सेक्रेटरी–जनरल अमीना मोहम्मद ने जो रिपोर्ट जारी की, उसके मुताबिक 2024 में समुद्र के जलस्तर में सालाना बढ़ोतरी अब तक के सबसे ऊंचे स्तर पर पहुंच गई है और यह लगभग छह मिलीमीटर दर्ज की गई है। इस बैठक की मेजबानी पलाऊ कर रहा है, जो प्रशांत महासागर के द्वीपों का एक देश है। समुद्र का जलस्तर बढ़ने से इसके कई द्वीप काफी हद तक डूब सकते हैं। यह बैठक इसी गंभीर खतरे को उजागर कर रही है।

रिपोर्ट में कहा गया है, "दक्षिण एशिया के निचले डेल्टा इलाकों और भारत के कोलकाता और मुंबई व बांग्लादेश के ढाका जैसे शहरों में सबसे बड़ा असर लोगों के विस्थापन के रूप में दिख रहा है। यहां 1.4 करोड़ से अधिक लोगों के घर हमेशा के लिए पानी में डूबने का खतरा है।" रिपोर्ट में इस डरावनी स्थिति के होने के लिए कोई निश्चित समय–सीमा तय नहीं की गई है।

न्यूयॉर्क में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में असिस्टेंट सेक्रेटरी–जनरल नाविद हनीफ ने कहा कि समुद्र का बढ़ता जलस्तर एक चुनौती पेश करता है, क्योंकि उन इलाकों में लोग अपना तटीय इलाका खो रहे हैं। समुद्र के बढ़ते जलस्तर का असर सिर्फ तटीय इलाकों तक ही सीमित नहीं है। उन्होंने कहा, "कृपया समुद्र के बढ़ते जलस्तर को एक बड़ी व्यवस्थागत समस्या के तौर पर देखें, क्योंकि इसका असर सेहत, खाद्य सुरक्षा, मानवाधिकारों और संस्कृति पर पड़ेगा। आप अपनी पुश्तैनी जमीन और अपनी पहचान खो देंगे। इसलिए सरकारों को इस मुद्दे को अपनी योजना बनाने की प्रक्रिया का हिस्सा बनाने के लिए बहुत व्यापक दृष्टिकोण अपनाने की जरूरत है।"

पिछले सप्ताह नेपाल–तिब्बत सीमा पर हिमालय से ग्लेशियर के टूटने और नीचे गिरने से पानी और कीचड़ का सुनामी जैसा सैलाब आया, जिसमें सैकड़ों लोगों की मौत हो गई और कई इलाके बर्बाद हो गए। दक्षिण एशिया पर ग्लेशियरों के पिघलने या नीचे गिरने के असर के बारे में पूछे जाने पर हनीफ ने कहा कि हिमालय के ग्लेशियरों को ‘तीसरा ध्रुव’ माना जाता है।

उन्होंने कहा, "हमारे पास उत्तरी ध्रुव और दक्षिणी ध्रुव हैं और दक्षिण एशिया में दुनिया के ग्लेशियरों का बड़ा जमावड़ा होने के कारण इसे ‘तीसरा ध्रुव’ माना जाता है। अगले 15 से 20 सालों में दक्षिण एशिया के लिए ग्लेशियरों के पिघलने से बाढ़ का खतरा है। उन्होंने कहा कि इसके बाद सूखा पड़ सकता है, जिससे फसलें और खाद्य सुरक्षा प्रभावित हो सकती है और बड़े जोखिम पैदा हो सकते हैं।

रिपोर्ट में कहा गया है कि दुनिया भर में लगभग 77 करोड़ लोग, यानी धरती पर हर दस में से लगभग एक व्यक्ति खतरे में हैं, क्योंकि वे ऐसे तटीय इलाकों में रहते हैं, जो हाई–टाइड लाइन (ज्वार–भाटा के दौरान पानी के अधिकतम स्तर की रेखा) से पांच मीटर से भी कम ऊंचे हैं और पहले से ही बड़े खतरों का सामना कर रहे हैं।

अनुमान है कि दुनिया भर में समुद्र का जलस्तर बढ़ने से जुड़े खतरों के कारण कम से कम 1.8 ट्रिलियन डॉलर की कीमत वाले इंफ्रास्ट्रक्चर को खतरा है। रिपोर्ट में कहा गया है, "समुद्र का जलस्तर बढ़ने से पहले ही शहरी इंफ्रास्ट्रक्चर, जल प्रणालियों, परिवहन, ऊर्जा ग्रिड, इमारतों और भूजल संसाधनों को नुकसान पहुंच रहा है। इसके दूरगामी परिणाम हो रहे हैं, जो लंबे समय में मानवाधिकारों के प्रभावी उपभोग के लिए खतरा पैदा करते हैं।"

रिपोर्ट में कहा गया है कि हालांकि समुद्र का जलस्तर बढ़ने का खतरा सबसे अधिक द्वीपीय देशों को महसूस होगा, लेकिन यह खतरा भौगोलिक सीमाओं को नहीं मानता। रिपोर्ट में कहा गया है, "उदाहरण के लिए, अमेरिका में मियामी और न्यूयॉर्क और चीन में ग्वांगझू जैसे अधिक आय वाले शहरों में मुख्य असर तटीय इंफ्रास्ट्रक्चर पर पड़ने वाला भारी वित्तीय जोखिम है, जिसमें खतरे में पड़ी संपत्तियों का अनुमानित मूल्य 2 ट्रिलियन डॉलर से 3.5 ट्रिलियन डॉलर के बीच है।"(इनपुट–आईएएनएस)

एलिफेंटा द्वीप के समुद्री इतिहास पर होगी स्टडी, आईआईटी खड़गपुर, मुंबई पोर्ट अथॉरिटी और एएसआई ने शुरू किया एक जॉइंट रिसर्च प्रोजेक्ट

नई दिल्ली, 04 सितम्बर। आईआईटी खड़गपुर, मुंबई पोर्ट अथॉरिटी और आर्कियोलॉजिकल सर्वे ऑफ इंडिया (एएसआई) ने एक जॉइंट रिसर्च प्रोजेक्ट शुरू किया है। इसका मकसद यह पता लगाना है कि ऐतिहासिक रूप से जलवायु में उतार–चढ़ाव और समुद्र के जलस्तर में बदलाव ने एलिफेंटा द्वीप और भारत के पश्चिमी तट के आस–पास समुद्री व्यापार और मानवीय गतिविधियों को कैसे प्रभावित किया।

बुधवार को आईआईटी खड़गपुर के जारी एक बयान के अनुसार, इस इंटरडिसिप्लिनरी (कई विषयों को शामिल करने वाले) प्रोजेक्ट में एडवांस्ड अर्थ–साइंस तकनीकों और पुरातात्विक सबूतों का इस्तेमाल किया जाएगा। इससे शुरुआती ऐतिहासिक काल से लेकर मध्यकाल तक समुद्र के जलस्तर, जलवायु की स्थितियों और समुद्री गतिविधियों का पता लगाया जा सकेगा। मुंबई पोर्ट अथॉरिटी ने इस पहल के लिए 1 करोड़ रुपए देने का वादा किया है।

संस्थान ने बयान में कहा कि इस पहल से पर्यावरण में बदलाव, तटीय भूगोल, प्राचीन बस्तियों और समुद्री नेटवर्क के बीच संबंधों के बारे में नई वैज्ञानिक जानकारी मिलने की उम्मीद है। इंटरगवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज का अनुमान है कि 2100 के आखिर तक वैश्विक समुद्र का जलस्तर 0.4 से 0.8 मीटर तक बढ़ जाएगा। भारत के पश्चिमी तट के लिए, यह बढ़ोतरी 1 मीटर तक हो सकती है। इससे न केवल मुंबई के निचले इलाके डूब जाएंगे, बल्कि एलिफेंटा द्वीप के आस–पास के इलाके भी प्रभावित होंगे, जहां भगवान शिव की 1500 साल पुरानी मशहूर रॉक–कट गुफाएं (पत्थर काटकर बनाई गई गुफाएँ) हैं, जो यूनेस्को की हेरिटेज साइट हैं।

यह प्रोजेक्ट शुरुआती ऐतिहासिक काल से लेकर मध्यकाल तक (यानी आज से 1500–1000 साल पहले) समुद्री व्यापार गतिविधियों पर जलवायु परिवर्तन और समुद्र के जलस्तर के असर का अध्ययन करेगा। साथ ही, जलवायु परिवर्तन के कारण समुद्र के जलस्तर में भविष्य में होने वाले बदलावों पर भी इसका महत्वपूर्ण असर पड़ेगा।

एएसआई के अभिजीत अंबेडकर की देखरेख में हाल ही में हुई खुदाई से पता चला है कि एलिफेंटा द्वीप लगभग 1,500 साल पहले इंसानी गतिविधियों का एक अहम केंद्र था। पुरातत्वविदों को 165 वर्ग मीटर बड़ा और आठ मीटर गहरा आयताकार जलाशय मिला, जो सीढ़ीदार रास्ते से जुड़ा था। इससे पता चलता है कि द्वीप पर मीठे पानी को जमा करने का एक बेहतरीन सिस्टम था।

खुदाई में बड़े स्टोरेज जार, इंडो–मेडिटेरेनियन एम्फोरा के टुकड़े, फिरोजा रंग की चमक वाले बर्तन और मेसोपोटामिया के टॉरपीडो जार भी मिले, जो बड़े पैमाने पर समुद्री व्यापारिक संबंधों की ओर इशारा करते हैं। पानी में डूबे हुए घाट के ढांचे, ज्वार–भाटा वाले इलाके में रहने की जगहों के अवशेष और बंदरगाह की संरचनाओं पर पानी के कई निशान बताते हैं कि एलिफेंटा सिर्फ एक धार्मिक स्थल नहीं था, बल्कि बड़े समुद्री व्यापार नेटवर्क का हिस्सा था।

स्कॉलरशिप से पढ़ाई और ऑक्सफोर्ड तक का सफर, जाने डॉ. राधाकृष्णन की जीवनी, जिनके जन्मदिन पर मनाते हैं टीचर्स डे

नई दिल्ली, 04 सितम्बर।

हर साल 5 सितंबर को भारत में टीचर्स डे मनाया जाता है। ये दिन हर टीचर और स्टूडेंट के लिए बहुत खास होता है, लेकिन क्या आप जानते हैं इस दिन को देश के पहले उपराष्ट्रपति के जन्मदिन के अवसर पर मनाया जाता है? हम बात कर रहे हैं डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन की। डॉ. राधाकृष्णन सिर्फ देश के पहले उपराष्ट्रपति या दूसरे राष्टपति ही नहीं थे, बल्कि वे खुद एक शिक्षक भी थे। वे अपनी सादगी और बुद्धिमानी के लिए जाने जाते थे।

डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन का जन्म 5 सितंबर 1888 को तमिलनाडु के तिरुतनी गांव में एक साधारण ब्राह्मण परिवार में हुआ था। परिवार की आर्थिक स्थिति कमजोर होने की वजह से उनका बचपन काफी संघर्षों के बीच बीता। डॉ. राधाकृष्णन को बचपन से ही पढ़ाई–लिखाई का काफी शौक था। उन्होंने स्कॉलरशिप्स की मदद से अपनी शिक्षा पूरी की और मद्रास क्रिश्चियन कॉलेज से फिलॉसफी में एम.ए की डिग्री हासिल की।

शिक्षा पूरी होने के बाद उन्होंने एक शिक्षक के रूप में उन्होंने अपने करियर की शुरुआत की। उन्होंने मैसूर यूनिवर्सिटी और कलकत्ता यूनिवर्सिटी में बतौर प्रोफेशर काम किया। वे सिर्फ एक शिक्षक नहीं थे, बल्कि एक दार्शनिक भी थे। उनके पढ़ाने का तरीका इतना बेहतरीन था कि छात्र उनके लेक्चर सुनने के लिए दूर–दूर से आते थे। उन्होंने ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी में भी बतौर प्रोफेशर काम किया और पश्चिमी दुनिया के सामने भारत के दर्शनशास्त्र को बहुत प्रभावशाली ढंग से पेश किया।

देश की स्वतंत्रता के बाद डॉ. राधाकृष्णन ने कूटनीति और राजनीति में भी अहम योगदान दिया। साल 1949–52 तक, वे सोवियत संघ में भारत के राजदूत रहे, जहां उन्होंने भारत के संबंधों को मजबूत बनाने के लिए काम किया। 1952 में वे भारत के पहले उपराष्ट्रपति बने और साल 1962 में देश के दूसरे राष्ट्रपति के रूप में कार्यभार संभाला। साल 1954 में उन्हें भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से सम्मानित किया गया।

डॉ. राधाकृष्णन से जुड़ी एक कहानी है कि एक बार उनका जन्मदिन मनाने उनके कुछ छात्र उनके पास पहुंचे। तब उन्होंने कहा कि मेरे जन्मदिन को अलग से मनाने के बजाय, इस दिन को देशभर के शिक्षकों के सम्मान के लिए समर्पित किया जाए, तो मेरे लिए बहुत गर्व और खुशी की बात होगी। उनके इसी विचार के सम्मान में हर साल टीचर्स डे मनाने की शुरुआत हुई।

वित्त मंत्री ने ग्लोबल कंपनियों के सीईओ को भारत में निवेश के लिए किया आमंत्रित

नई दिल्ली, 04 सितम्बर।

वित्त मंत्री श्रीमती निर्मला सीतारमण ने न्यूयॉर्क में वैश्विक कंपनियों के मुख्य कार्यकारी अधिकारियों (सीईओ) के साथ कई दौर की बैठकें कीं और उन्हें भारत की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्था में निवेश के लिए आमंत्रित किया। सरकार की ओर से शुक्रवार को दी गई जानकारी के अनुसार, बैठकों के दौरान भारत के डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर, वित्तीय सेवाओं, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई), जोखिम प्रबंधन और ग्लोबल कैपेबिलिटी सेंटर (जीसीसी) समेत विभिन्न क्षेत्रों में निवेश के अवसरों पर चर्चा हुई।

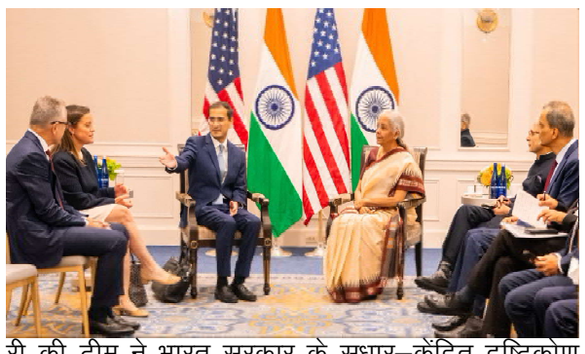

टिलमैन होल्डिंग्स के चेयरमैन और सीईओ संजीव आहूजा के साथ बैठक में वित्त मंत्री ने कहा कि हालिया बजट घोषणाओं समेत भारत की नीतिगत व्यवस्था डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर में निवेश को बढ़ावा देती है। उन्होंने एआई, क्लाउड कंप्यूटिंग, डिजिटल सेवाओं और एंटरप्राइज टेक्नोलॉजी जैसे क्षेत्रों में तेजी से हो रही वृद्धि का भी उल्लेख किया। उन्होंने कहा कि इन क्षेत्रों में डेटा सेंटर, हाई–कैपेसिटी नेटवर्क और भरोसेमंद बिजली इन्फ्रास्ट्रक्चर की मांग लगातार बढ़ रही है। ऐसे में टिलमैन होल्डिंग्स जैसी कंपनियां भारत के डिजिटल इन्फ्रास्ट्रक्चर के विकास के अगले चरण में भाग लेने के लिए बेहतर स्थिति में हैं।

मार्श री के सीईओ डीन क्लिसुरा और कंपनी की रणनीति एवं कॉरपोरेट डेवलपमेंट प्रमुख देवांशु ध्यानी के साथ बैठक में निर्मला सीतारमण ने कहा कि भारत वैश्विक प्रोफेशनल सर्विसेज और रिस्क–मैनेजमेंट कंपनियों को बड़ा घरेलू बाजार, कुशल प्रतिभा, तेजी से विस्तार करता इन्फ्रास्ट्रक्चर, डिजिटल क्षमताएं और लगातार सुधारों की दिशा में बढ़ता कारोबारी माहौल उपलब्ध कराता है। मार्श री की टीम ने भारत सरकार के सुधार–केंद्रित दृष्टिकोण की सराहना की और कहा कि कंपनी भारत में अपनी मौजूदगी और कारोबार का विस्तार करने की योजना बना रही है। कंपनी ने कहा कि भारत एक समान अवसर वाला बाजार उपलब्ध कराता है और यहां भारतीय बीमा नियामक एवं विकास प्राधिकरण (आईआरडीएआई) जैसा मजबूत नियामक मौजूद है। मार्श री ने यह भी बताया कि उसने गिफ्ट सिटी पर अपना फोकस मजबूत किया है और वहां वित्तीय इकोसिस्टम के साथ उत्पादों और सेवाओं के विभिन्न क्षेत्रों में अपनी भागीदारी बढ़ा रही है।

वित्त मंत्री की बीएनवाई मेलन के ग्रुप सीओओ एलेजांद्रो पेरेज के साथ बैठक में भारत की मजबूत विकास यात्रा और वैश्विक वित्तीय संस्थानों के लिए देश में निवेश की बढ़ती संभावनाओं पर चर्चा हुई। पेरेज ने भारत के प्रति बीएनवाई मेलन की लंबे समय से चली आ रही प्रतिबद्धता और कंपनी की वैश्विक गतिविधियों तथा विकास रणनीति में भारत को एक महत्वपूर्ण बाजार के रूप में देखने की बात कही। (इनपुटः आईएएनएस)

ग्रीन शिपिंग में भारत की बड़ी तैयारी, पोत परिवहन मंत्री ने बंदरगाहों को हरित ईंधन के लिए तेजी से तैयार होने को कहा

नई दिल्ली, 04 सितम्बर।

केंद्रीय पत्तन, पोत परिवहन और जलमार्ग मंत्री श्री सर्बानंद सोनोवाल ने शुक्रवार को गुरुग्राम स्थित ऊर्जा और संसाधन संस्थान (टेरी) के ग्वाल पहाड़ी परिसर का दौरा कर ग्रीन शिपिंग से जुड़ी विभिन्न पहलों की समीक्षा की और भारत के समुद्री क्षेत्र को कार्बन–मुक्त करने के प्रयासों में तेजी लाने पर जोर दिया। उन्होंने प्रस्तावित ग्रीन शिपिंग कॉरिडोर, वैकल्पिक ईंधनों के लिए बंदरगाहों की तैयारियों, ग्रीन बंकरिंग हब और तटवर्ती विद्युत आपूर्ति जैसी पहलों की प्रगति की समीक्षा करते हुए कहा कि भारत का लक्ष्य कम–कार्बन वाले समुद्री व्यापार में अग्रणी भूमिका निभाना है। उन्होंने कहा कि 2026 में ग्रीन शिपिंग अब केवल विकल्प नहीं रह गया है और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत अपने समुद्री क्षेत्र को कार्बन–मुक्त करने के प्रयासों को और तेज करने के लिए तैयार है।

श्री सर्बानंद सोनोवाल ने कहा कि ग्रीन शिपिंग अब कोई विकल्प मात्र नहीं रह गया है, बल्कि पूरी दुनिया इसी दिशा में आगे बढ़ रही है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत इसमें अग्रणी भूमिका निभाने का इरादा रखता है। उन्होंने कहा कि हमारे बंदरगाहों को भविष्य के ईंधनों के लिए तैयार होना चाहिए और इस दिशा में तेजी से आगे बढ़ने में टेरी जैसे संस्थान महत्वपूर्ण भागीदार हैं। उन्होंने दौरे के दौरान पर्यावरण संरक्षण के प्रति प्रतिबद्धता का संदेश देते हुए एक पौधा भी लगाया।

दौरे के दौरान श्री सर्बानंद सोनोवाल को ग्रीन पोर्ट्स एंड शिपिंग के लिए राष्ट्रीय उत्कृष्टता केंद्र (NCoEGPS) के कार्यों की जानकारी दी गई। केंद्र ने समुद्री क्षेत्र को कार्बन–मुक्त करने की दिशा में मंत्रालय को सहयोग देने के लिए अपने कार्यादेश, चल रही परियोजनाओं और आगामी योजनाओं की जानकारी प्रस्तुत की। बैठक में इस बात पर जोर दिया गया कि अनुसंधान संस्थानों, सरकार और समुद्री उद्योग के बीच मजबूत समन्वय से भारत में स्वच्छ समुद्री परिवहन के लिए जरूरी तकनीक और अवसंरचना को तेजी से विकसित किया जा सकता है।

मणिपुर का फ्लोटिंग विलेज चंपू खंगपोक, घर बदल लेंगे हवा के साथ अपनी लोकेशन!

नई दिल्ली, 04 सितम्बर।

जरा सोचकर देखिए कि आप ऐसी जगह पर घूमने गए हैं जहां कदम रखते ही जमीन डगमगाने लगे। ऐसा लगे कि आप चल नहीं रहे बल्कि तैर रहे हैं। क्यों लग रहा है न सोचने पर यह दृश एकदम सपने जैसा। कुछ ऐसा ही है मणिपुर का फ्लोटिंग विलेज चंपू खंगपोक।

भारत के उत्तर–पूर्वी राज्य मणिपुर में एक तैरता हुआ गांव स्थित है जिसका नाम चंपू खंगपोक है। दरअसल, यह गांव भारत की प्रसिद्ध लोकटक झील पर बसा है जो करीब 240 वर्ग किलोमीटर के आकार में फैली हुई है। इस गांव में पानी के साथ लोगों ने जीना सीख लिया है, तभी तो पानी पर चलते लोग, तैरते द्वीप और घर देखने को मिलते हैं।

चंपू खंगपोक गांव के तैरने के पीछे कोई जादू नहीं बल्कि साइंस का कमाल है। इसका कारण इस स्थान की प्रकृति और बायोमास का प्रोसेस है। ऐसा इसलिए क्योंकि इस गांव की जमीन किसी मिट्टी या चट्टान से बनी न होकर फुम्डी नामक प्राकृतिक जमीन है। यह सड़े–गले पौधों, जड़ों, मिट्टी और जैविक पदार्थों की परतों से बनी होती है।

साल–दर–साल जब इन सभी का जमावड़ा एक जगह इकट्ठा होता रहता है तो इसकी परत से जमीन निर्मित हो जाती है। इसकी मजबूती इतनी होती हैं कि घरों का निर्माण तक किया जा सकता है।

यहां रहने वाले लोगों के घरों जिन्हें फुमशंग कहा जाता है, अपनी लोकेशन बदलते रहते हैं। अब क्योंकि ये जमीन नहीं फुम्डी पर बने हैं तो हवा के दबाव और पानी के बहाव के कारण इनकी लोकेशन बदलती रहती है। यही वजह यह कि चंपू खंगपोक आज दुनियाभर में अपनी इसी विशेषता की वजह से आकर्षण का केंद्र बना हुआ है।

एक अनोखे गांव के अलावा लोकटक झील में आपको तैरता हुआ कीबुल लामजाओ नेशनल पार्क भी देखने को मिलेगा। यह पार्क बिष्णुपुर जिले में लोकटक झील के दक्षिण पश्चिम में करीब 40 वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में स्थित है। इस जगह की सबसे खास बात यह है कि यहां विलुप्त होने की कगार पर खड़े संगाई हिरण रहते हैं और यही उनका अकेला आवास स्थल भी है।

भारत की अंतरिक्ष क्षेत्र में एक और बड़ी छलांग, इसरो ने ईओएस–05 का सफल प्रक्षेपण किया

श्रीहरिकोटा (आंध्र प्रदेश), 04 सितंबर (हि.स.)।

भारत ने अंतरिक्ष क्षेत्र में आज एक और बड़ी सफलता हासिल की। भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने सुबह से पहले श्रीहरिकोटा से जीएसएलवी– एफ17 रॉकेट के जरिए पृथ्वी अवलोकन उपग्रह ईओएस–05 का सफल प्रक्षेपण किया। इसरो अध्यक्ष वी. नारायणन समेत कई पूर्व इसरो अध्यक्षों की मौजूदगी में हुआ प्रक्षेपण कई मायनों में ऐतिहासिक है।

इसरो के अनुसार, प्रक्षेपण के करीब 18 मिनट बाद भारत के पहले इमेजिंग उपग्रह को जियोसिंक्रोनस कक्षा में सफलतापूर्वक स्थापित किया गया। ईओएस–05 से वास्तविक समय में तस्वीरें मिलेंगी। इससे कृषि और आपदा प्रबंधन जैसे क्षेत्रों में मदद मिलेगी। इसरो प्रमुख नारायणन ने कहा कि यह मिशन भारत की पृथ्वी अवलोकन क्षमताओं को और मजबूत करेगा।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने कहा कि जीएसएलवी–एफ17 रॉकेट के माध्यम से किया गया प्रक्षेपण जीएसएलवी की 19वीं उड़ान है। चार सितंबर को मध्यरात्रि के करीब तीन घंटे बाद 02.55 बजे सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से प्रक्षेपित उपग्रह भारत का पहला अत्याधुनिक भू–तुल्यकालिक इमेजिंग सैटेलाइट है। ईओएस–05 मिशन का मकसद उप–भू–तुल्यकालिक स्थानांतरण कक्षा में स्थापित उपग्रह के माध्यम से पृथ्वी की परिक्रमा करते हुए अहम जानकारी मुहैया कराना है।

प्रक्षेपण को देखने के लिए खगोल विज्ञान में रुचि रखने वाले दर्शक बड़ी संख्या में इसरो के सेंटर पर मौजूद रहे। प्रक्षेपण के करीब 22 मिनट बाद मिशन निदेशक ने प्रक्षेपण सफल होने की घोषणा की। इसके बाद इसरो प्रमुख नारायणन ने इससे जुड़ी कुछ प्रमुख बातें साझा कीं। उन्होंने कहा कि एक बार जब पृथ्वी अवलोकन उपग्रह 05 कक्षा में परिचालन में आ जाएगा, तो यह भारत का भू–कक्षा से पहला समर्पित इमेजिंग उपग्रह बन जाएगा, जो हमारे देश के लिए महत्वपूर्ण रणनीतिक डेटा प्रदान करेगा।

इसरो प्रमुख नारायणन ने बताया कि आज का लॉन्च, श्रीहरिकोटा से इसरो का 107वां प्रक्षेपण है। उन्होंने कहा कि जीएसएलवी–एफ17 में लगातार सुधार और उन्नयन के बाद लॉन्च व्हीकल मौजूदा स्वरूप में काम कर रहा है। इसरो प्रमुख ने कहा कि औद्योगिक जगत के समर्थन के अलावा इस मिशन की सफलता के पीछे इसरो के वैज्ञानिकों का टीम वर्क है। उन्होंने कहा कि वैज्ञानिकों के परिवार में शामिल लोगों की भी अहम भूमिका रही है।

उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री के निर्देशानुसार इसरो छह और प्रक्षेपणों का लक्ष्य लेकर आगे बढ़ रहा है। उन्होंने कहा

कि गगनयान मिशन पर भी सक्रिय रूप से काम हो रहा है। अंतरिक्ष के क्षेत्र में स्टार्टअप को लेकर इसरो प्रमुख ने कहा कि देश में माहौल सकारात्मक है।

नारायणन ने कहा कि जीएसएलवी यान से अब तक जितने प्रक्षेपण किए गए, उनमें ईओएस 05 सबसे भारी उपग्रह है। इस ऐतिहासिक मिशन से जुड़े तमाम वैज्ञानिकों और मिशन डायरेक्टर थॉमस कुरियन ने प्रक्षेपण में मिली सफलता के बाद एक स्वर में जय हिंद के उद्घोष के साथ देशवासियों को बधाई दी।

इसरो पदाधिकारी इम्तियाज ने कहा, जब हौसला बना लिया ऊंची उड़ान का, फिर देखना फिजूल है कद आसमान का। उन्होंने कहा कि इस सबसे भारी उपग्रह और जटिलता से भरे मिशन में पूरी टीम ने एकजुट होकर काम किया। जहां भी कदम डगमगाए और हौसला कमजोर हुआ, वरिष्ठ अधिकारियों ने पूरा समर्थन किया।

ईओएस–05 एक अत्याधुनिक अर्थ ऑब्जर्वेशन सैटेलाइट है। इसका मुख्य काम अंतरिक्ष से पृथ्वी की इमेजिंग करना है। इसका वजन करीब 2367 किलोग्राम है। ईओएस–05 को खासतौर पर जियोसिंक्रोनस ऑर्बिट से पृथ्वी की इमेजिंग के लिए तैयार किया गया है। इस ऑर्बिट में पहुंचने के बाद सैटेलाइट पृथ्वी के एक बड़े क्षेत्र को बार–बार देख सकेगा। इस मिशन को एनएसआईएल ने एक रणनीतिक उपयोगकर्ता के लिए समर्पित लॉन्च के तौर पर किया है। इसके साथ भारत और दूसरे देशों के उपयोगकर्ताओं के 18 सह–यात्री सैटेलाइट भी भेजे गए हैं।

जीएसएलवी–एफ 17 भारत के जियोसिंक्रोनस सैटेलाइट लॉन्च व्हीकल यानी जीएसएलवी की 19वीं उड़ान है। इसकी लंबाई करीब 51.7 मीटर और लिफ्ट–ऑफ मास करीब 420.5 टन है। इसे श्रीहरिकोटा स्थित सतीश धवन स्पेस सेंटर के सेकंड लॉन्च पैड से लॉन्च किया गया। रॉकेट के ऊपर 4 मीटर व्यास वाली ओगिव कंपोजिट पेलोड फेयरिंग लगी है, जिसके अंदर ईओएस–05 को रखा गया था।

'होमवर्क क्यों नहीं किया' जैसे टीचर्स के वो सबसे यादगार डायलॉग्स जो आज भी चेहरे पर ला देते हैं बड़ी सी मुस्कान

नई दिल्ली, 04 सितम्बर।

आज भी जब हम टीचर्स डे के बारे में सुनते हैं तो हमें अपने पुराने दिन याद आते हैं, क्योंकि एक यही तो दिन होता था जब बच्चे अपनी फेवरेट टीचर जैसा बनकर उनकी नकल कर पाते थे और उन्हें डांट भी नहीं पड़ती थी। उन दिनों से जुड़े डिसिप्लिन और पढ़ाई जैसी बातों के अलावा, आज कुछ याद रह गया है तो वो वही पुराने टीचर्स के डायलॉग्स हैं। इसमें भी सबसे खास बात पता है क्या है? इन्हें आज भी हर जेनरेशन अपने टीचर्स से रिलेट कर पाती है।

क्लास में कोई स्टूडेंट जब भी होमवर्क करके नहीं लाता था, तब टीचर्स का सबसे तीखा सवाल हुआ करता था कि कभी खाना भूलते हो? उस समय ऐसा लगता था मानो सामने से टीचर ने कोई ब्रह्मास्त्र छोड़ दिया हो क्योंकि इसके बाद कोई जवाब ही नहीं होता था।

क्लास में कोई टीचर आई हो और वो यह न कहे कि इससे बुरी क्लास मैंने कभी नहीं देखी, ऐसा तो हो ही नहीं सकता। सबसे मजेदार बात यह है कि यह डायलॉग हर एक नए बैच को कहा जाता था, शायद इस आस से कि सभी सुधरने की कोशिश करें। ऐसा कोई स्टूडेंट ही नहीं होगा जिसने अपनी टीचर से यह बात न सुनी हो, क्यों सही कहा न?

क्लास के सारे बच्चे चाहे जोर–जोर से बातें कर रहे हों या फिर हल्की–फुल्की फुसफुसाहट, मछली बाजार होने

का टैग मिलना यूनिवर्सल है। हर टीचर के लिए आज भी यह सबसे पसंदीदा डायलॉग है। टीचर का एक अल्टिमेटम कि सिग्नेचर के बगैर क्लास में एंट्री नहीं मिलेगी, कहीं न कहीं हमें डरा जरूर देता था। उसपर भी अगर किसी स्टूडेंट के मार्क्स बहुत कम आए हो और वो रिपोर्ट कार्ड दिखाना नहीं चाहता हो तो सिग्नेचर वाली बात किसी धमकी से कम नहीं होती थी।

क्लास में पीछे बैठे लोग टीचर की नजरों में दुश्मन जैसे होते हैं, ऐसा लगता है कि सबकी गलती की सजा उन्हें ही मिल रही है। फिर जब टीचर से यह सुनने को मिल जाए कि क्यों हंस रहे हो, पूरी क्लास को जोक सुनाओ तब वो बात बताना दुनिया का सबसे मुश्किल टास्क होता था। पर एक बात तो है कि बैकबेंचर्स के बगैर क्लास में रौनक नहीं होती।

रील्स देख–देखकर दिमाग हो रहा है खोखला? नई रिसर्च ने खोली सबकी आंखें

नई दिल्ली, 04 सितम्बर।

रील्स और शॉर्ट्स जैसे छोटे वीडियो की लत दिमाग के लिए हानिकारक है। रिसर्च बताती है कि इससे फोकस और सेल्फ–कंट्रोल घटता है। एक्सपर्ट्स इसके लिए टाइम लिमिट सेट करने और ब्रेक लेने की सलाह देते हैं। आजकल स्मार्टफोन हमारी जिंदगी का एक अहम हिस्सा बन गया है। खासकर, इंस्टाग्राम रील्स और यूट्यूब शॉर्ट्स जैसे छोटे वीडियो देखना तो हर उम्र के लोगों का नया शौक बन गया है। अक्सर हम 5 मिनट के मनोरंजन के लिए फोन उठाते हैं, लेकिन कब घंटों बीत जाते हैं, पता ही नहीं चलता।

शुरुआत में यह सिर्फ टाइम पास लगता है, लेकिन धीरे–धीरे यह एक लत में बदल जाता है। रिसर्च में चेतावनी दी गई है कि लगातार स्क्रीन स्क्रॉल करने की यह आदत आपके दिमाग की ध्यान लगाने और खुद पर काबू रखने की क्षमता पर बहुत बुरा असर डाल सकती है।

'फ्रंटियर्स इन ह्यूमन न्यूरोसाइंस' जर्नल में एक ईईजी स्टडी छपी है। इसमें 56 युवाओं पर शॉर्ट वीडियोज़ के असर को परखा गया। स्टडी में पाया गया कि जो लोग बहुत ज़्यादा शॉर्ट वीडियो देखते हैं, उनके दिमाग के 'प्रीफ्रंटल कॉर्टेक्स' हिस्से में 'एक्जीक्यूटिव कंट्रोल' की क्षमता कम हो गई थी।

आपको बता दें कि दिमाग का यह हिस्सा किसी भी काम पर फोकस करने, जरूरी फैसले लेने और ध्यान बनाए रखने में सबसे अहम भूमिका निभाता है। रिसर्चर्स का मानना है कि ज़्यादा शॉर्ट्स देखने वालों का ध्यान बहुत जल्दी भटक सकता है। उनके मुताबिक, लगातार शॉर्ट वीडियो देखने से दिमाग में सिर्फ निचले स्तर की भावनाएं ही एक्टिव रहती हैं। इसका नतीजा यह होता है कि सेल्फ–कंट्रोल और गहरी एकाग्रता के लिए जिम्मेदार दिमाग की हाई–लेवल एक्टिविटी कम हो जाती है।

हाल ही में एक और बड़ी एनालिसिस की गई, जिसमें 71

अलग–अलग स्टडीज़ को जांचा गया। इन स्टडीज़ में कुल 98,299 लोग शामिल थे। इसमें भी यह बात सामने आई कि जो लोग बहुत ज़्यादा शॉर्ट वीडियो देखते हैं, उनकी सोचने–समझने की क्षमता, खासकर ध्यान लगाने और सेल्फ–कंट्रोल में कमी देखी गई। हालांकि, एक्सपर्ट्स ने यह भी साफ किया है कि इसका असर सब पर एक जैसा हो, यह जरूरी नहीं है और इस पर अभी और रिसर्च की जरूरत है।

शॉर्ट वीडियो देखना पूरी तरह से बंद करने की जरूरत नहीं है, लेकिन अपना फोकस बनाए रखने के लिए आप कुछ अच्छी डिजिटल आदतें अपना सकते हैं–

आप दिन में कितनी देर रील्स देखेंगे, इसके लिए एक टाइम लिमिट सेट करें।

लगातार स्क्रीन देखने के बजाय, बीच–बीच में छोटे–छोटे ब्रेक लेते रहें।

पढ़ाई करते समय या ऑफिस का कोई जरूरी काम करते वक्त फोन को साइलेंट पर रखकर खुद से दूर रखें।

सीधी सी बात है, कोई भी चीज मनोरंजन के लिए हो तो अच्छी लगती है। लेकिन जब यह आदत आपके रोजमर्रा के जरूरी कामों पर असर डालने लगे, तो सावधान हो जाना चाहिए।